# अल्लारक्खा खाँ

उस्ताद अल्लारखा खाँ

विश्व प्रसिद्ध तबला-वादक अल्लारक्खा खाँ के नाम से प्राय: सभी संगीत-प्रेमी परिचित हैं। इनका जन्म जम्मू के फगवाल नामक गाँव में 29 अप्रैल सन् 1919 ई० को हुआ। ये बाल्यावस्था से ही तबले की ओर आकर्षित थे। इनका बचपन चाचा के साथ पंजाब के गुरदासपुर में गुजरा। इनके पिता का नाम हाशिमअली था, जो एक किसान थे। इनकी मुलाकात पंजाब घराने के मियाँ कादिर बख्श के साथ हुई जिन्होंने संगीत के क्षेत्र में अल्लारक्खाँ के लिए प्रेरणा स्रोत का काम किया। इन्होंने "राग विद्या" पटियाला घराना के उस्ताद आशिक अली खाँ से सीखा। तबले के प्रति अत्यधिक लगाव, समर्पण तथा मेहनत के कारण इन्हें तबले की अच्छी तालिम प्राप्त हो सकी।

इन्होंने संगीत पेशे की शुरुआत लाहौर से की। तत्पश्चात् ऑल इंडिया रेडियो (मुम्बई) में सन् 1940 ई० में स्टाफ कलाकार के रूप में रहे। चार-पाँच वर्ष के पश्चात् इन्होंने फिल्म क्षेत्र से संपर्क किया और कुछ फिल्मों में संगीत-निर्देशन का कार्य भी किया।

सन् 1960 ई० में इनका संपर्क पं० रविशंकर से हुआ और इन दोनों ने पश्चिम में अपने प्रदर्शन से दर्शकों को हिन्दुस्तानी संगीत से मंत्रमुग्ध कर दिया। इन्होंने कर्नाटक संगीत और हिन्दुस्तानी संगीत को जोड़ने में एक पुल का काम किया है। इनका भारतीय तबला-वादन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका तबला वादन पंजाब घराने से है। बेमिसाल तैयारी और सफाई इनकी वादन शैली का एक विशेष गुण था। इनको दूसरे दिग्गज कलाकारों के साथ संगति करने का भी गौरव प्राप्त है। इनके पुत्र जाकिर हुसैन भी तबला के प्रसिद्ध कलाकार के रूप में विख्यात है।

# पं० राम प्रवेश सिंह

पं० राम प्रवेश सिंह

बिहार के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० राम प्रवेश सिंह का जन्म पटना जिले के विक्रम थाना अंतर्गत ग्राम दादूपुर में 16 अप्रैल सन् 1923 ई० में एक किसान-परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री हरिनन्दन सिंह एवं माताजी का नाम श्रीमती दुलारी देवी था। बाल्यकाल से ही कला के प्रति इनमें अलौकिक आस्था थी। कला की खोज में सर्वप्रथम खासपुर (दानापुर) निवासी श्री यमुना राम से इनका संपर्क हुआ और तबले की प्रारंभिक शिक्षा उन्हीं से प्राप्त हुई। तत्पश्चात् जमीरा निवासी श्री शत्रुंजय प्रसाद सिंह उर्फ ललन बाबू के सम्पर्क में आये और तबले की बारीकियों को जानने, सुनने एवं सीखने का अवसर मिला। ललन बाबू के यहाँ देश के बड़े-बड़े कलाकारों का प्रदर्शन अक्सर होते रहता था। वहीं अजराड़ा घराना के उस्ताद हनीबद्दीन खाँ से सम्पर्क हुआ और उनसे तबला सीखने की इच्छा जाहिर की। उस्ताद ने इनकी सेवा भक्ति देखकर अपने यहाँ आने का वचन दे दिया। लगभग तीन वर्षों तक उस्ताद से अजराड़े घराने की बारीकियों को सीखते रहे। इसके पश्चात् भी तबला सीखने की प्यास नहीं बुझी। ज्ञान की खोज में वे कलकत्ता के जाने माने संगीतज्ञ पद्म विभूषण पं० ज्ञान प्रकाश घोष एवं कन्हाई दत्त जैसे दिग्गज कलाकारों के सम्पर्क में आये और जीवन पर्यन्त उनलोगों से तबला सीखते रहे।

पंडित जी 23 वर्षों तक पटना विश्वविद्यालय के अंतर्गत मगध महिला कॉलेज के संगीत विभाग में कार्यरत रहे। पं० जी आकाशवाणी पटना से भी उच्च ग्रेड कलाकार के रूप में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे।

1966 ई० में पंडित जी गुवाहाटी रेडियो में विधिवत स्टॉफ कलाकार के रूप में 13 वर्षों तक कार्यरत रहे। दरभंगा में रेडियो स्टेशन खुला तो वे दरभंगा में स्थानांतरित हो गये।

इनके प्रमुख शिष्यों में श्री सिद्धेश्वर शर्मा, सूर्यदेव सिंह, शंभूनाथ मस्ताना, पारस नाथ मिश्रा, देवेन्द्र शर्मा, श्याम सुन्दर, राजशेखर, धवल जी, सुदर्शन शर्मा, सुधीर कुमार (पौत्र) आदि थे।

पंडित जी ने जिन कलाकारों के साथ संगति की है उनमें से प्रमुख निखिल बनर्जी, अमीर खाँ साहब, वी० जी० जोग, मनोज शंकर, गुलाम मुस्तफा, बहादुर खाँ, बेगम अख्तर,